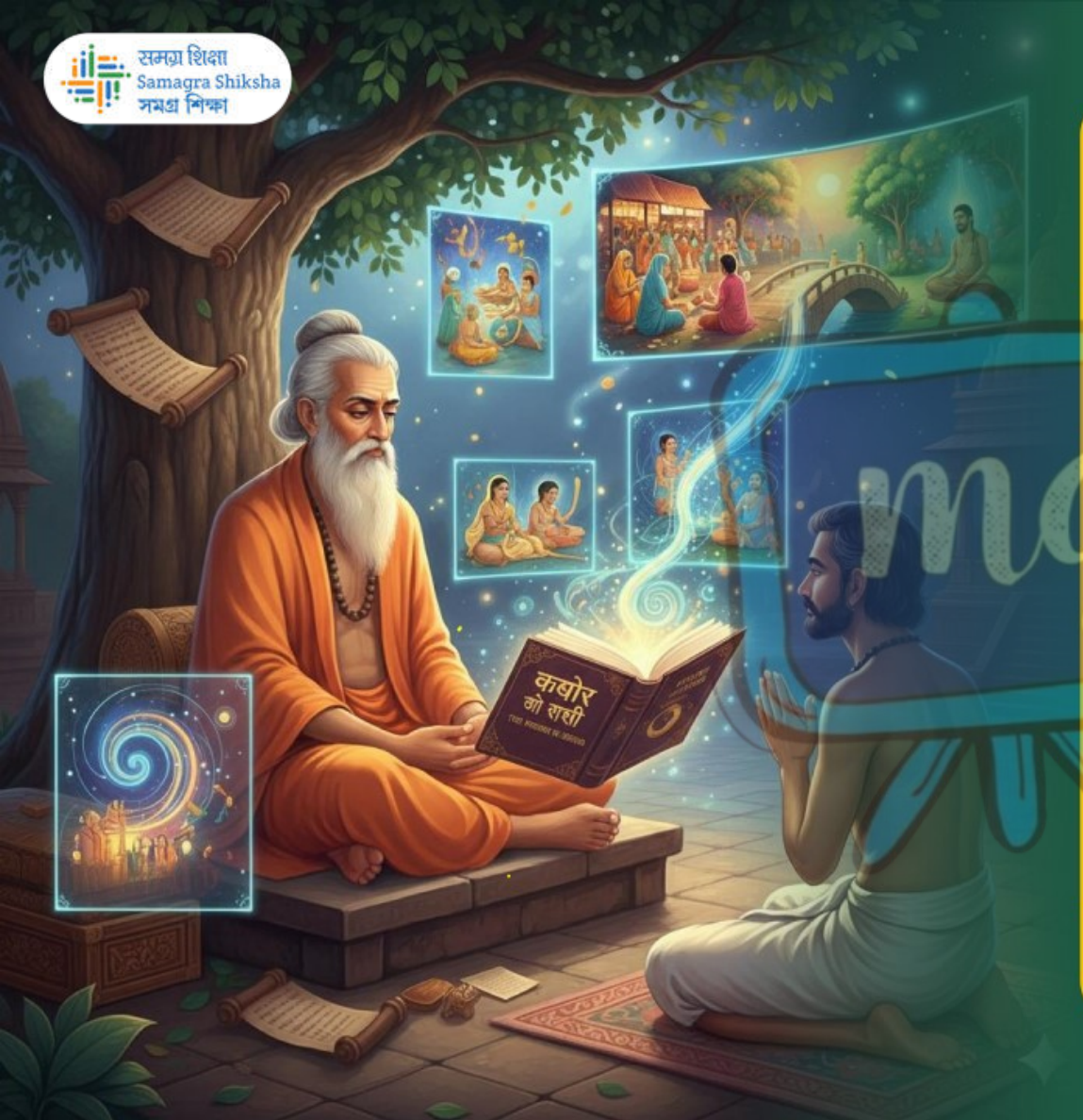


कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 7

साखी

(कबीरदास (1398-1518))

भाग – 1

पल्लवी कलिता

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कबीरदास (1398-1518)

कवि परिचय

जन्म: 1398 ई. में काशी में

पालक माता-पित्ता : नीरू और नीमा

नामकरण : पालक माता-पिता ने उनका नाम रखा कबीर । कबीर शब्द का अर्थ है - बड़ा, महान, श्रेष्ठ ।

गुरु :- स्वामी रामानंद

आराध्य : इस संसार के रोम-रोम में रमने वाले, प्रत्येक अणु-परमाणु में बसने वाले निर्गुण निराकार 'राम' की आराधना करते थे।

रचनाएँ : कबीरदास जी की रचनाएँ 'बीजक' नाम से प्रसिद्ध है। इसके तीन भेद हैं-

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca Foundation



काव्य-भाषा : वस्तुतः तत्कालीन हिन्दुस्तानी है, जिसे विद्वानों ने 'सधुक्कड़ी, 'पंचमेल खिचड़ी' आदि कहा है।

कविताओं का विषय : उनकी कविताओं में भक्ति भाव के अलावा व्यावहारिक ज्ञान एवं मानवतावादी दृष्टि का समावेश हुआ है। कबीरदास जी की कविताओं की लोकप्रियता के आधार पर श्रीमंत शंकरदेव ने अपने ग्रंथ 'कीर्तन घोषा' में लिखा है कि उरेषा, वाराणसी इत्यादि स्थानों पर साधु-संत लोग कबीर विरचित गीत-पद गाते हैं-

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उरेषा वारानसी ठावे ठावे ।
कविर गीत शिष्टसवे गावे ।। (कीर्तन घोषा – 3/32)

रचनाओं के विषय : ज्ञान, भक्ति, आत्मा, परमात्मा, माया, प्रेम, वैराग्य आदि गंभीर विषय उनकी रचनाओं में अत्यंत सुबोध एवं स्पष्ट रूप में व्यक्त हुए हैं।

मृत्यु : सन् 1518 ई. में मगहर

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

साखी

साखी शब्द मूल संस्कृत शब्द 'साक्षी' से विकसित है। 'साक्षी' से संबंधित शब्द है 'साक्ष्य, जिसका अर्थ है - प्रत्यक्ष ज्ञान। गुरु सत्य के साक्ष्य प्रमाण के साथ शिष्य को इहलोक और परलोक के तत्वज्ञान की शिक्षा देते हैं। साखी में कबीरदास जी ने अपनी आँखों से देखकर समाज में व्याप्त कुरीतियों और बाहरी आडंबरों के भाव को दिखाने के अलावा व्यावहारिक ज्ञान एवं मानवतावादी दृष्टि का समावेश किया है।

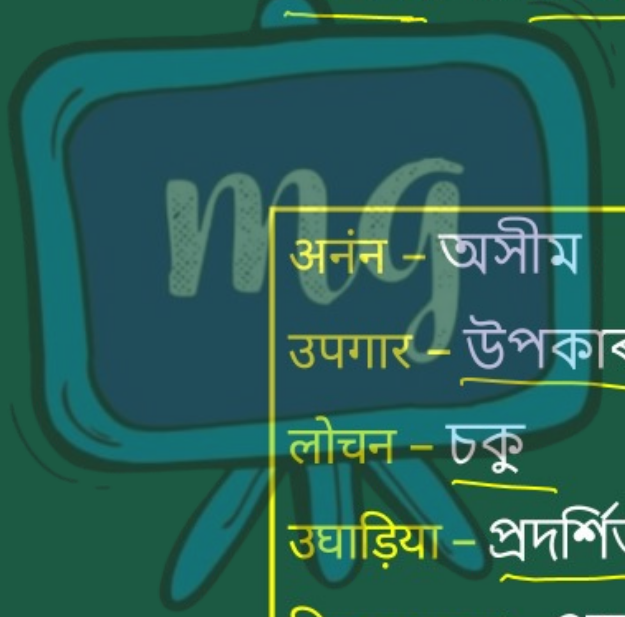
तेरा साईं तुज्झ में, ज्यों पुहुपन में बास।
कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिर-फिर ढूँढ़े घास । 11

तेरा – তোমাৰ
साईं – ভগৱান
तुज्झ – তোমাৰ
पुहुपन – ফুল
बास – সুগন্ধ
कस्तूरी – নৰ হৰিণৰ নাভিত পোৱা এবিধ সুগন্ধি দ্ৰব্য
ढूँढ़े – বিচাৰি ফুৰা

अर्थ

"ईश्वर तुम्हारे भीतर ही वास करता है, अर्थात् ईश्वर हमारे हृदय में वास करते हैं, जैसे फूल में खुशबू रहती है । फिर भी, मनुष्य ईश्वर को बाहर ढूँढ़ता है, जैसे कस्तूरी नामक सुगंध हिरण के नाभि में रहता है, लेकिन वह अपनी कस्तूरी को बाहर ढूँढ़ता फिरता है।"

सत गुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार। 21



अनंत – অসীম
उपगार – উপকাৰ
लोचन – চকু
उघाड़िया – প্রদর্শিত
दिखावणहार – প্রদর্শনকাৰী

अर्थ

सच्चे गुरु की महिमा अथाह है, और वे शिष्यों पर अनगिनत उपकार करते हैं। उन्होंने अपनी दृष्टि और ज्ञान से सबको मार्ग दिखाया और अपने अनंत गुणों का दर्शन कराया। माया के कारण हमारी आँखें बंद पड़ी थी, सदगुरु ने उस आवरण को हटाकर हमें सत्य का दर्शन करवाया।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़े खोट ।
अन्तर हाथ सहार दे, बाहर बाहै चोट । 3 ।

कुम्हार – মাটিৰ বাচন বনোৱা শিল্পী

सिष – শিষ্য

काढ़े – কাঢ়ি লোৱা বা দূৰ কৰা

खोट – বেয়া, অপৰ্যাপ্ত

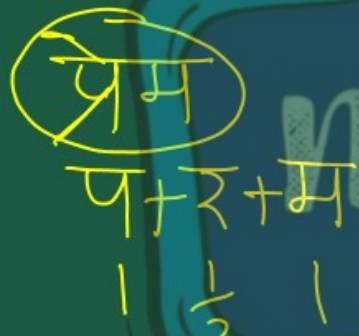
कुंभ – কলহ

चोट – প্ৰহাৰ

अर्थ

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है" का अर्थ है कि गुरु कुम्हार के समान है और शिष्य घड़े के समान है। जिस तरह एक कुम्हार मिट्टी को आकार देने के लिए घड़े पर बाहर से चोट मारता है और अंदर से सहारा देता है, उसी तरह गुरु भी शिष्य को सही रास्ते पर लाने के लिए उसकी बुराइयों को बाहर से सुधारते हैं और अंदर से सहारा देते हैं।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय । 41



पोथी – পুথি, কিতাপ
जग – জগত
मुआ – মৃত্যু হোৱা
ढाई – আঢ়ৈ
आखर - আখৰ

अर्थ

इस दोहे का अर्थ है कि दुनिया में बहुत से लोग किताबें और शास्त्र पढ़कर ही मर जाते हैं, पर कोई ज्ञानी नहीं बन पाता। संत कबीर के अनुसार, जो व्यक्ति प्रेम के "ढाई अक्षर" (प्यार या प्रेम की सच्ची भावना) को समझ लेता है, वही असली ज्ञानी होता है। जो व्यक्ति प्रेम, करुणा और भक्ति की सच्ची भावना को समझ लेता है, वही सच्चा ज्ञानी या पंडित होता है।

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फ़ेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर ।5।

जुग – যুগ
भया– পাৰ হৈ গ'ল
मन का फेर - মনৰ অপৰিত্ৰ ভাৱ, চিন্তা
कर - হাত
मनका –মালাৰ মনি
डारि –দলিয়াই
मन का – মনৰ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अर्थ

इस दोहे का अर्थ है कि व्यक्ति युगों से हाथ से माला फेर रहा है, लेकिन उसके मन के विचार तथा भावनाएँ नहीं बदलीं। अतः हाथ की माला को त्याग कर अपने मन को शांत और शुद्ध करने की जरूरत है। इस दोहे में कबीरदास जी बाहरी आडम्बरों की बजाय आंतरिक शुद्धि और सच्चे मन से किए गए जाप को के महत्व को दिखा रहे हैं। कवि के अनुसार ईश्वर की प्राप्ति के लिए बाहरी दिखावे के स्थान पर सच्ची भक्ति, सादगी और आंतरिक शुद्धि की आवश्यकता है।

मूल्यांकन



1 कस्तूरी कहाँ मिलती है ?

क वन में

ख मृग की नाभि में

ग फूल में

मूल्यांकन



2 | गुरु शिष्य में क्या निकालते हैं ?

क खोट या दोष

ख सुंदरता

ग लिखने की कला

मूल्यांकन



3 'बीजक' में कितने भाग है ?

क चार

ख तीन

ग दो